

# डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 1, परिचय, भाग 1, संदर्भ में लेखक और प्राप्तकर्ता

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 1, परिचय, भाग एक, लेखक और प्राप्तकर्ता संदर्भ में है।

लूका के सुसमाचार के अध्ययन में आपका स्वागत है।

यह लूका के सुसमाचार के अध्ययन का बाइबिल ई-लर्निंग है। जैसा कि आप अब तक जान चुके होंगे, बाइबिल ई-लर्निंग ने आपको बाइबिल और सामान्य रूप से धर्मशास्त्रीय अध्ययनों के बारे में बहुत सी ऐसी बातें बताई हैं जो आप जानते होंगे। यहाँ, हम लूका के दो मुख्य लेखनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उनमें से एक का चयन करते हैं।

दूसरा वाला आपके लिए पहले से ही उपलब्ध है, और मेरे एक सहकर्मी ने वास्तव में उस श्रृंखला को आप तक पहुँचाने में बहुत अच्छा काम किया है। जैसा कि हम ल्यूक के सुसमाचार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यीशु मसीह, उनके कार्य, उनकी मृत्यु और उनके पुनरुत्थान के बारे में बात करते हुए चार खातों की कल्पना करें। यदि आप चाहें, तो वह हमारी दुनिया को बचाने के लिए आया था।

लूका यीशु मसीह और सामान्य रूप से चर्च के कार्य को समझने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि लूका सुसमाचार का एकमात्र लेखक है जो हमें यीशु मसीह और प्रारंभिक चर्च के कार्य के बीच एक निरंतरता दिखाने के लिए प्रेरितों की पुस्तक देता है। तो आइए इस अध्ययन को सामान्य रूप से इस सुसमाचार पर एक त्वरित नज़र डालकर शुरू करें और इस विशेष सत्र में मैं आपको कुछ महत्वपूर्ण चीज़ों से परिचित कराने का प्रयास करूँगा जो आप लेखक के बारे में जानना चाहेंगे, इस विशेष पत्र का संदर्भ, लूका जिस दुनिया के बारे में लिखता है उसे कैसे देखता है, और कुछ चीज़ें जो वह अध्ययन के दौरान उल्लेख करेगा जिसे समझना आपके लिए उपयोगी होगा ताकि प्राचीन दुनिया और हमारे आधुनिक संदर्भ के बीच की खाई को पाटा जा सके। क्या मैं जल्दी से आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित कर सकता हूँ कि यदि आप गैर-पश्चिमी पृष्ठभूमि से इन व्याख्याओं का अनुसरण कर रहे हैं, तो आप मेरे साथ धैर्य रखना चाहेंगे ताकि कुछ पश्चिमी सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाजों और मानदंडों के बीच की खाई को पाटने की कोशिश की जा सके जो लूका की दुनिया से काफी अलग हैं और आपको शायद कुछ ऐसा मिल जाए जो आपके परिचित के करीब हो।

तो, चलिए लेखकत्व के मुद्दे पर नज़र डालते हैं। लूका के सुसमाचार को किसने लिखा, और हम उस व्यक्ति के बारे में कैसे जानते हैं जिसने उस विशेष सुसमाचार को लिखा था? खैर, हमारे पास स्वयं पाठ में लेखकत्व के बारे में बताने वाला कोई सबूत नहीं है। दूसरे शब्दों में, हमें बताया गया है कि लूका ने इसे सुसमाचार के बाहर के स्रोतों से लिखा था।

लेकिन यह कैसे हुआ, और ईसाई परंपरा में यह कैसे स्थापित हुआ कि, वास्तव में, लूका ने इसे लिखा था? हम इसके बारे में सोचने के दो मुख्य तरीकों को देखते हैं। जिसे मैं नए नियम के भीतर आंतरिक साक्ष्य कहता हूँ, वह हमें इस बात की कुछ झलक देता है कि यह व्यक्ति कौन है, और इस लेखक के बारे में शुरुआती ईसाइयों ने जो कहा है, उस पर बाहरी साक्ष्य लूका के लेखक के बारे में हमारी समझ पर प्रकाश डालने में मदद करता है। इसलिए, आंतरिक साक्ष्य के संदर्भ में, हमारे पास वास्तव में सुसमाचार के भीतर ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें बताता है कि लूका ने इसे लिखा था, पॉल के विपरीत, जो यह कहना पसंद करता है कि पॉल, प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित, स्वेन में चर्च को लिखते हैं।

इसलिए, लूका ने ऐसा नहीं किया। लूका हमें बताता है कि वह किसके लिए पत्र लिखता है, लेकिन अपने बारे में कोई जानकारी नहीं देता। आंतरिक साक्ष्य और उसके अभाव के साथ, यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इस पत्र और प्रेरितों के काम की पुस्तक को कैसे पेश किया जाता है, इसकी आंतरिक विशेषताएं दर्शाती हैं कि वास्तव में, एक व्यक्ति ने नए नियम के इन दो लंबे लेखों को लिखा था।

वास्तव में, यदि आप दोनों को एक साथ रखते हैं, तो आपको नए नियम का लगभग एक तिहाई भाग वहीं मिल जाता है। लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम भी एक ही व्यक्ति को संबोधित हैं। लेखन शैली और निरंतर पैटर्न, जिनमें से कुछ मैं इस विशेष सत्र में दिखाऊंगा, हमें यह समझने में मदद करेगा कि यह दिखाने के लिए पर्याप्त आंतरिक साक्ष्य हैं कि लूका के सुसमाचार का लेखक वही है जिसने प्रेरितों के काम की पुस्तक भी लिखी है।

यह लूका जिसे परंपरा लूका के सुसमाचार से जोड़ती है, वही है जिसके बारे में हम नए नियम में सुनते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उसने खुद नए नियम में कहीं भी कहा है कि वह लेखक है। लेकिन इसका मतलब यह है कि कुछ लेखन में, विशेष रूप से पॉल के लेखन में, और प्रेरितों की पुस्तक में पाए जाने वाले कुछ प्रथम-व्यक्ति बहुवचन संदर्भों से ऐसा लगता है कि यह वह व्यक्ति है जिसके साथ हम बात कर रहे हैं।

तो, चलिए जल्दी से बाहरी सबूतों पर चलते हैं, और कुछ बिंदु पर, मैं आपको कुछ टिप्पणियों पर वापस ले जाऊंगा जो हम आंतरिक रूप से करते हैं। बाहरी सबूतों के संदर्भ में, पाँच महत्वपूर्ण गवाह हैं जो विद्वानों, चर्च के सदस्यों और चर्च परंपराओं को यह समझने में मदद करते हैं कि लूका का सुसमाचार किसने लिखा और यह विशेष सुसमाचार लूका से कैसे जुड़ा। सुसमाचार पर हमारे पास जो सबसे पुरानी पांडुलिपि है, वह टेक्स्ट टाइप है जिसे हम P75 कहते हैं।

P75, विशेष रूप से, लूका की सबसे पुरानी पांडुलिपि होने के नाते, वास्तव में लूका को इस विशेष पांडुलिपि के लेखक के रूप में संदर्भित करता है। यह उन परिचयों में से एक है, जैसे-जैसे लेखन आगे बढ़ता है, विभिन्न चर्च नेता या परंपराएँ यह निर्धारित करती हैं कि यह किससे आया है और इसे किसके पास भेजा जा रहा है। इसलिए, लूका की सबसे पुरानी पांडुलिपि लूका को लेखकत्व प्रदान करती है।

ध्यान देने वाली दूसरी बात दूसरी शताब्दी की एक बहुत ही महत्वपूर्ण पांडुलिपि है जिसे मोरेटोरियम कैनन कहा जाता है। मोरेटोरियम कैनन में भी ल्यूक, चर्च के पिताओं में से एक, इरेनियस को लेखक माना गया है, जिनके बारे में हम चर्च की परंपराओं का अध्ययन करते समय बहुत सुनते हैं। इरेनियस ने विधर्मियों के खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया में वास्तव में यह स्पष्ट किया है, जैसा कि मैं एक मिनट में उद्धरण दिखाऊंगा, कि पॉल के साथी ल्यूक ने ही सुसमाचार लिखा था जिसे हम ल्यूक का सुसमाचार कहते हैं।

एक और चर्च लीडर जिसने वास्तव में अपना पूरा करियर मार्सियन के पीछे, एक व्यवसायी, धर्मशास्त्री के पीछे बनाया, जो वास्तव में, मुझे नहीं पता कि कैसे, मैं यहाँ जिस भाषा का उपयोग करता हूँ, उसके बारे में बहुत सावधान हूँ। वह एक बहुत ही संदिग्ध विधर्मी था जिसे चर्च ने कभी जाना था। टर्टुलियन ने वास्तव में अपने जीवन में बहुत अच्छा किया है, मार्सियन की पीठ पर अपनी पूरी धार्मिक प्रसिद्धि का निर्माण किया और मार्सियन द्वारा लिखी गई किसी भी हास्यास्पद बात का जवाब देने की कोशिश की।

टर्टुलियन ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ल्यूक उस सुसमाचार के लेखक हैं जिसे हम ल्यूक के सुसमाचार के रूप में संदर्भित करते हैं। प्रारंभिक चर्च इतिहासकार यूसेबियस, जिन्होंने हमें चर्च के इतिहास की एक बड़ी मात्रा का संकलन दिया है, वे भी ल्यूक और इस पाठ के लेखकत्व का उल्लेख करते हैं और यहां तक कि हमें उनके संभावित मूल के बारे में कुछ झलक भी देते हैं। फिर से, अगर मैं आपको मुराटोरियन कैनन पर पहले दिए गए संदर्भ पर वापस ले जाऊँ, तो वाक्यांश या खंड वास्तव में इस तरह पढ़ता है।

लूका, जो पॉल का साथी भी था, ने एक पुस्तक में उसके द्वारा प्रचारित सुसमाचार को दर्ज किया। यह संदर्भ एक ऐसे संदर्भ में दिया गया था जो लूका के सुसमाचार पर बातचीत के साथ संरेखित प्रतीत होता था। अंश में, हमें इस व्यक्ति के चिकित्सक होने के बारे में कुछ और विवरण भी मिलते हैं।

लेकिन शायद मुझे यहाँ रुककर उस भ्रांति को स्पष्ट करना चाहिए जो अक्सर सामने आती है, कि चूँकि ल्यूक को एक चिकित्सक के रूप में वर्णित किया गया है, इसलिए हमें हमेशा एक चिकित्सक के दृष्टिकोण से उसके चमत्कारी विवरण की जाँच करनी चाहिए। यह ज़रूरी नहीं है कि ऐसा ही हो। अंश में, हम पुस्तक पढ़ते हैं।

सुसमाचार की तीसरी पुस्तक लूका के अनुसार है। लूका, जो एक प्रसिद्ध चिकित्सक था, ने मसीह के स्वर्गारोहण के बाद, जब पौलुस उसे व्यवस्था के प्रति उत्साही के रूप में अपने साथ ले गया था, तो उसने आम धारणा के अनुसार अपने नाम से इसकी रचना की। आम धारणा के अनुसार, परंपरा पर ध्यान दें।

टर्टुलियन संदर्भ में, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, टर्टुलियन ने अपने शब्दों में लिखा है, क्योंकि लूका के सुसमाचार के रूप में भी लोग आमतौर पर पॉल को तीसरे सुसमाचार का संदर्भ देते हैं। यूसेबियस के चर्च संबंधी इतिहास में, वह लिखते हैं, लेकिन लूका के लिए, अपने सुसमाचार की शुरुआत में, वह खुद ही उन कारणों को बताता है जिसके कारण उसे इसे लिखना

पड़ा। वह कहता है कि चूँकि कई अन्य लोगों ने उन घटनाओं का वर्णन करने का जल्दबाजी में काम किया था, जिनके बारे में उसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त था, इसलिए उसने स्वयं, हमें उनके अनिश्चित विचारों से मुक्त करने की आवश्यकता महसूस करते हुए, अपने स्वयं के सुसमाचार में उन घटनाओं का सटीक विवरण दिया, जिनके बारे में उसने पूरी सच्चाई सीखी थी, जिसमें उसकी घनिष्ठता और पॉल के साथ उसके रहने और बाकी प्रेरितों के साथ उसके परिचय से सहायता मिली थी।

जॉन फिट्ज़मायर, जिन्होंने लूका पर एक बहुत बढ़िया खंड, वास्तव में, दो खंडों की टिप्पणी लिखी है, मैं उनके परिचय में लिखता हूँ, जिसमें उन्होंने इन प्रारंभिक चर्च परंपराओं में से कुछ को उद्धृत किया है। लूका एंटीओक का एक सीरियाई था, पेशे से एक चिकित्सक, प्रेरितों का शिष्य, और बाद में अपनी शहादत तक पॉल का अनुयायी था। उसने बिना विनाश, बिना पत्नी और बिना बच्चों के प्रभु की सेवा की।

वह 84 वर्ष की आयु में बोएटिया में पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर मर गए। अब, यदि आप लूका के सुसमाचार और लूका के लेखन के बारे में कुछ भी समझते हैं, तो आत्मा से परिपूर्ण होने के बारे में सुनकर ही आपके चेहरे पर मुस्कान आ जानी चाहिए। इसलिए, आम तौर पर, मैं इस बात से यह कहना चाहता हूँ कि हमारे पास कोई आंतरिक साक्ष्य नहीं है, या जिसे हम धर्मशास्त्रीय शब्दावली में लूका का आत्म-अभिकथन कहेंगे, मैंने तीसरा सुसमाचार लिखा है।

लेकिन हमारे पास इस बात के संदर्भ हैं कि नए नियम में जिस लूका का उल्लेख किया गया है, वही परंपरा तीसरे सुसमाचार के लेखकत्व का श्रेय भी देती है। जो लोग इस विवरण के सबसे करीब हैं और जो इन परंपराओं के सबसे करीब हैं, जिनके बारे में वह लिखते हैं, उन्होंने हमें इस बात की ओर इशारा किया है। विद्वानों में अब तक इस बात पर कोई विवाद नहीं हुआ है कि क्या हमें वास्तव में इसे लूका को देना चाहिए या नहीं।

इसलिए, हम इस विशेष सुसमाचार को इस आधार पर देखते हैं कि परंपरा के अनुसार लूका ने इस सुसमाचार को लिखा था, और हम इस लेखन की व्याख्या करने के लिए उस परंपरा पर खड़े हैं। नए नियम में इस लूका के उल्लेख के संदर्भ में, हमारे पास उसका तीन बार उल्लेख है। कुलुस्सियों में उसका उल्लेख है।

कुलुस्सियों 4 पद 14 में उन्हें प्रिय चिकित्सक के रूप में संदर्भित किया गया है। समय मुझे यह निर्धारित करने की अनुमति नहीं देगा कि हमें इसे पॉल के लेखन से जोड़ना चाहिए या नहीं। लेकिन अगर आप कुलुस्सियों को पॉल की परंपरा से लेते हैं, तो हम पॉल की परंपरा से पॉल के एक साथी को यह बताते हुए पाते हैं कि वह एक चिकित्सक था।

हम फिलेमोन को लिखे पौलुस के पत्र में भी पढ़ते हैं, जिसमें लूका को सहकर्मी के रूप में संदर्भित किया गया है। हमें 2 तीमुथियुस 4 पद 11 में लूका का एक और संदर्भ मिलता है, एक ऐसा पाठ जिसके बारे में पॉल के विद्वानों के बीच विवाद है कि क्या इसे पॉल ने लिखा था या नहीं। लेकिन पॉल की परंपरा में इन तीनों संदर्भों को लें, और हम पाते हैं कि एक व्यक्ति जो प्रेरितों के काम की पुस्तक से पॉल से जुड़ा हुआ है, विशेष रूप से प्रेरितों के काम अध्याय 16 से, उसे भी

पॉल की परंपरा में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में संदर्भित किया गया है जो एक प्रिय चिकित्सक था, जो एक सहकर्मी था और खुद पॉल का एकमात्र साथी था।

तो, हम इस लूका के बारे में और क्या जानते हैं? हम कुछ बातें जानते हैं। हम उसके सुसमाचार से पता लगाते हैं कि वह जिन घटनाओं के बारे में लिखता है, उनका वह प्रत्यक्षदर्शी नहीं था। वास्तव में, जैसा कि हम इस अध्ययन में आगे देखेंगे, वह हमें यह बताने में सावधान था कि उसने अपने निष्कर्षों की जांच करने के लिए समय लिया और उन्हें प्रत्यक्षदर्शियों से एकत्र किया, जिससे हमें यह पता चलता है कि वह स्वयं प्रत्यक्षदर्शी नहीं था।

सुसमाचार से हमें जो भी संकेत मिलते हैं, और साथ ही उनके दूसरे अंश से, जिसे हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के रूप में जानते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि यह व्यक्ति दूसरी पीढ़ी का मसीह अनुयायी था, या जैसा कि कुछ लोग सुझाव देते हैं, तीसरी पीढ़ी का मसीह अनुयायी था। लूका की पृष्ठभूमि के बारे में एक बात जो स्पष्ट रूप से सामने आती है, वह यह है कि वह अच्छी तरह से शिक्षित था। कभी-कभी मैं अपने पेंटेकोस्टल करिश्माई मित्रों को संदर्भित करना या समझाना पसंद करता हूँ कि यदि कोई सोचता है कि पवित्र आत्मा प्रेरितों के काम की पुस्तक और लूका में इतनी बार दिखाई देती है, और इसलिए वह कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो उतना शिक्षित न हो, तो वह व्यक्ति सत्य से बहुत दूर हो सकता है।

क्योंकि वह बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। वास्तव में, नए नियम के लेखकों के रूप में हमारे पास दो सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हैं जो हमें पवित्र आत्मा और पवित्र आत्मा के उपहारों के बारे में बताने के लिए बहुत उत्सुक हैं, जैसा कि हम देखेंगे। और ल्यूक स्पष्ट रूप से उनमें से एक है।

उनकी ग्रीक भाषा से ऐसा व्यक्ति दिखता है जिसे भाषा का अच्छा ज्ञान और अधिकार है। उनका व्याकरण और उनकी रचना से ऐसा व्यक्ति दिखता है जिसे अपने समय की साहित्यिक कलात्मकता की अच्छी समझ है। कथा, कथात्मक संरचनाओं, पाठ की रचना करने के तरीके, कथानक और कथानक को सुलझाने के तरीके के संदर्भ में भी, ल्यूक वाकई ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो वास्तव में लिखना जानता है और अपने समय की समझ में अपना मामला प्रस्तुत करता है।

उनकी शिक्षा के बारे में एक और बात जो उल्लेखनीय है, वह है पुराने नियम का उनका ज्ञान। मैं केवल कुछ ही विद्वानों से मिला हूँ, मुझे कहना चाहिए, मैं मुट्टी भर विद्वानों को भी नहीं गिनाऊंगा जो सुझाव देते हैं कि लूका एक यहूदी होना चाहिए। लेकिन अब तक, अधिकांश विद्वान, और मैं निश्चित रूप से उस स्थिति का समर्थन करता हूँ कि लूका एक गैर-यहूदी मसीह अनुयायी प्रतीत होता है जो थियोफिलस को लिख रहा था, जो एक गैर-यहूदी भी है।

लेकिन इसी गैर-यहूदी ने इब्रानी शास्त्रों का इतना अच्छा अध्ययन करने का बीड़ा उठाया। इसलिए उसके लेखन में, हमें पुराने नियम के संकेत और प्रत्यक्ष संदर्भ दोनों मिलते हैं। परंपरा में लिखना मानो हमें यह बताना हो कि, देखो, मसीहा के बारे में मसीहाई भविष्यवाणियाँ पूरी हो रही हैं।

और मैं आपको दिखाता हूँ कि यह कैसे पूरा हो रहा है। हिब्रू शास्त्रों के बारे में उनका ज्ञान काफी व्यापक है, और हम इस पाठ का अन्वेषण करते समय उसमें से कुछ देखेंगे। दूसरी बात जो मेरे कुछ सहकर्मी और कुछ लोग जो इस पर नज़र रख रहे हैं, जिन्हें पढ़ाने का मुझे सौभाग्य मिला है, वे कहेंगे कि मैं ब्रह्मांड विज्ञान और आत्मा ब्रह्मांड विज्ञान के बारे में बहुत पागल हूँ।

खैर, अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो अनुमान लगाइए क्या होगा? मैं पॉल और ल्यूक का साथी हूँ। ल्यूक की आत्मा ब्रह्मांड विज्ञान एक ऐसी चीज है जिसे हमें उसके लेखन का ध्यानपूर्वक अनुसरण करने के लिए समय निकालने की आवश्यकता है। ल्यूक का विश्वदृष्टिकोण और उसके समय का विश्वदृष्टिकोण एक ऐसी दुनिया थी जिसमें भौतिक दुनिया आध्यात्मिक दुनिया से अलग या दूर नहीं थी।

दुनिया के आध्यात्मिक आयाम इस एक ब्रह्मांड का एक ही हिस्सा हैं, और इसी वजह से, देवदूत मनुष्यों के साथ बातचीत कर सकते हैं। आत्मिक प्राणी मनुष्यों के जीवन में काम कर सकते हैं। आध्यात्मिक एजेंट मनुष्यों के दायरे में आकर काम कर सकते हैं।

पूरा विचार यह है कि आत्माएँ हमारे साथ मौजूद हैं, और वे हमारे अंदर काम कर सकती हैं, वे हमारे साथ संवाद कर सकती हैं, वे सपनों में संदेश दे सकती हैं, और वे ऐसा उस दुनिया में कर सकती हैं जिसमें ल्यूक रहता था। उसने दुनिया को एक ऐसी दुनिया के रूप में देखा जहाँ आध्यात्मिक वास्तविकताएँ, चाहे वह अच्छी हों या बुरी, प्रचलित थीं। इसलिए, जैसा कि हम ल्यूक के सुसमाचार में देखेंगे, एक आध्यात्मिक प्राणी द्वारा एक महिला को गर्भवती करने जैसी अजीबोगरीब चीजें उसके वृत्तांत में घटित होंगी।

और यदि आप पश्चिमी दार्शनिक ढांचे में हैं, तो आप कहेंगे, इसका क्या मतलब है? खैर, जिस दुनिया में ल्यूक रहता था, जिस विश्वास प्रणाली में उसने काम किया, और जिसे हमारे ईसाई धर्म के लिए मौलिक माना जाता है, उसमें ईश्वर या आध्यात्मिक एजेंट के लिए मनुष्यों के जीवन में काम करने की संभावना के लिए जगह बनानी होगी ताकि बहुत सी चीजें प्रभावी हो सकें। तो, दूसरी ओर, ल्यूक ईश्वर, पवित्र आत्मा और यीशु मसीह की गतिविधि के बारे में बात करेगा। दूसरी ओर, वह राक्षसी कब्जे, दुष्ट आध्यात्मिक प्राणियों और कैसे मसीह में, ईश्वर इस युगांतिक युग में मसीहाई साम्राज्य को प्रकट करते हुए बुराई की इन शक्तियों पर विजय प्राप्त करता है, के बारे में भी बात करेगा।

मुझे ल्यूक के परिचय में जोएल ग्रीन की एक पंक्ति पसंद है, जब वह लिखते हैं, और मैं हमेशा इस तथ्य के प्रति सचेत रहता हूँ कि जब मैं आत्मा ब्रह्मांड विज्ञान के बारे में बात करता हूँ, तो यह कहना आसान होता है कि यह अजीब अफ्रीकी व्यक्ति सभी प्रकार की अजीब अफ्रीकी चीजों में विश्वास करता है। और इसलिए, मैं जोएल ग्रीन से एक पंक्ति प्राप्त करने में कामयाब रहा, जो यह समझने की कोशिश कर रहा था कि हमें ल्यूक और उसकी दुनिया के लिए ल्यूक को समझने की कोशिश करनी चाहिए। वह लिखते हैं कि ल्यूक की दुनिया ऐसी है जिसमें भगवान चमत्कारी अवधारणाओं के माध्यम से हस्तक्षेप करते हैं।

उदाहरण के लिए, स्वर्गदूत नियमित रूप से स्वर्ग और पृथ्वी के बीच मध्यस्थता करते हैं, और शैतानी ताकतें सक्रिय हैं। यही ल्यूक की दुनिया है। इन पृष्ठभूमियों के बारे में सोचें, और पाठ शुरू करते समय ऊब न जाएँ क्योंकि ये उस तरीके के लिए आधारभूत हैं जिस तरह से हम पाठ को देखते हैं।

अब तक, मैंने यही करने की कोशिश की है। सबसे पहले, आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना कि लूका का सुसमाचार, आरंभिक ईसाइयों के समय से लेकर आज तक मौजूद है। दूसरा, कि लूका की दुनिया एक ऐसी दुनिया है जिसमें आत्माएँ मनुष्यों के मामलों में काम करने में सक्षम हैं।

आखिरी बात जिस पर मैं जल्दी से ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, जो सुसमाचार के हमारे अध्ययन में भी शामिल होगी, वह यह है कि लूका की दुनिया में और लूका की कथा में यहूदी धर्म कैसे काम करेगा। दूसरे मंदिर काल तक, जिस समय लूका लिख रहा था, यहूदी अभी भी मसीहा के आने की उम्मीद कर रहे थे। वे उम्मीद कर रहे थे कि वह आएगा और उनके दुश्मनों को हराएगा, 23बुराई पर विजय प्राप्त करेगा, और दाऊद को राज्य वापस दिलाएगा।

लेकिन यहूदी धर्म का स्वरूप सुलैमान के समय से अलग था। सभी यहूदी मंदिर को बहुत गंभीरता से लेते थे और साल में एक या दो बार मंदिर में जाकर अलग-अलग त्योहार और अनुष्ठान करते थे। लेकिन निर्वासन में जाने और निर्वासन से लौटने के बाद एक और चीज़ जो आई थी, वह थी आराधनालय पूजा, जहाँ यहूदी इमारतों में, विभिन्न प्रकार के अभयारण्यों में इकट्ठा होते थे, कानून के बारे में सीखते थे, त्योहार मनाते थे, यहूदी संस्कृति के सभी प्रकार के काम करते थे ताकि वे अपने धर्म, अपनी धार्मिक शिक्षाओं और विशेष रूप से युवा लोगों को उनकी धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं में शामिल कर सकें।

आराधनालय महत्वपूर्ण होने जा रहे हैं क्योंकि लूका हमें याद दिलाएगा कि यीशु अपने मंत्रालय के दौरान ऐसी जगहों पर जाएँगे। लूका की दुनिया में यहूदी धर्म के बारे में सोचते समय ध्यान देने वाली दूसरी बात उस समय के संप्रदाय हैं। लूका के लेखन के समय यहूदी धर्म एकरूप नहीं था।

हमारे पास कई संप्रदाय हैं, जैसे कि फरीसी, सद्दूकी, एसेन और जोसफस हमें याद दिलाता है कि नया दर्शन है। लेकिन इनमें से केवल दो संप्रदाय, प्रमुख संप्रदाय, लूका में नामित हैं; एक फरीसी है, और दूसरा सद्दूकी है। अब, सद्दूकियों के मार्ग पर, हम उन्हें लूका में पाएँगे, आमतौर पर जब यीशु यरूशलेम में होता है, क्योंकि सद्दूकी वे थे जो मंदिर में होने वाली चीज़ों के लिए ज्यादातर जिम्मेदार थे, और वे मंदिर के नेतृत्व में काफी हद तक शामिल थे।

वास्तव में, न्यू टेस्टामेंट के विद्वानों में से हममें से बहुत से लोग यह मानते हैं कि यहूदी महायाजक सद्दूकियों के संप्रदाय से ही आते हैं। लेकिन सद्दूकियों को पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं था। उनका मानना था कि अगर आप मर जाते हैं, तो आपकी आत्मा आपके साथ ही नष्ट हो जाती है।

दूसरा संप्रदाय जिसके बारे में हम ईसाइयों के रूप में ज्यादा जानते हैं, वह है फरीसी। लूका इस विशेष संप्रदाय के बारे में उस तरह से बात करेगा जो हम आम तौर पर उनके बारे में जो सोचते हैं उससे बहुत अलग है। फरीसी मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास करते थे।

फरीसी कानूनी धार्मिकता में विश्वास करते थे। फरीसी सादा जीवन जीने में विश्वास करते थे। वास्तव में, यीशु और मत्ती का फरीसियों के साथ बहुत टकराव हुआ, इसलिए नहीं कि उनकी शिक्षाएँ बहुत अलग थीं, बल्कि इसलिए कि उनकी शिक्षाएँ बहुत समान थीं।

लूका में, मैथ्यू के विपरीत, फरीसी हमेशा बुरे लोग नहीं थे। लूका में, फरीसी सिर्फ़ समझदार लोग हैं जो अपने धर्म के बारे में ज़्यादा जानने की कोशिश कर रहे हैं, जिनकी धार्मिक मान्यताएँ यीशु से काफ़ी मिलती-जुलती हैं, और कभी-कभी उन्हें यीशु से परेशानी होती है, लेकिन अक्सर वे यीशु और यीशु के अनुयायियों की बहुत मदद करते हैं, और कभी-कभी यीशु और उनके अनुयायियों की मदद करने के लिए हस्तक्षेप करने की कोशिश भी करते हैं। उदाहरण के लिए, लूका के दूसरे खंड में, फरीसी वास्तव में, हमारे पास चर्च में भी फरीसी हैं, प्रेरितों के काम में।

हमारी धारणाओं से यह बहुत अलग है। और इसका कुछ हिस्सा यहाँ प्रकट किया जाएगा। लेकिन जब हम इस नींव को रखेंगे तो एक मिनट मेरे साथ रुकें, क्योंकि ल्यूक इसी ढांचे के भीतर काम करने जा रहा है।

मैंने आपको बताया कि वह एक सुशिक्षित व्यक्ति था, और उसे अपनी धार्मिक परंपरा में सुशिक्षित लोगों की सराहना थी, जो अपनी धार्मिक अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश करते थे, उनके पास सवाल और जवाब होते थे, और उन्हें उचित तरीके से ध्यान देने की आवश्यकता होती थी। दूसरी बात जो हम पाते हैं वह है लूका द्वारा सेप्टुआजेंट का उपयोग। लूका हिब्रू शास्त्रों का बहुत अधिक उल्लेख करता है, और अक्सर, उसके उद्धरण या उसके संकेत सेप्टुआजेंट से आते प्रतीत होते हैं।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह ग्रीक भाषा में बहुत धाराप्रवाह था, और हिब्रू शास्त्रों का ग्रीक अनुवाद कुछ ऐसा बन गया जिसके बारे में वह बहुत जानकार था। इसका मतलब यह नहीं है कि पहली शताब्दी तक, सेप्टुआजेंट सबसे लोकप्रिय पाठ था जो आराधनालयों में अधिकांश यहूदियों के लिए सुलभ और उपलब्ध था। यहूदी धर्म के बारे में यह कहने के बाद, मैं आपको यह धारणा नहीं देना चाहता कि यहूदी हमेशा पेंटेकोस्टल और बैपटिस्ट और कैथोलिक और प्रेस्बिटेरियन की तरह लड़ते रहते थे।

नहीं! यहूदियों में चार चीजें थीं, चाहे वे कहीं भी रहे हों और उनका विश्वास कुछ भी हो, जो उन सभी में समान थी। इन चार चीजों ने उन्हें इतनी मजबूती से एकजुट किया कि उनके बीच धार्मिक मतभेद हो सकते हैं, लेकिन उनके पास सामूहिक विश्वास प्रणाली है जो उनकी संस्कृति और उनके मानदंडों को आकार देती है और यही उन्हें त्योहारों के लिए एक साथ लाती है, चाहे वे किसी भी संप्रदाय से संबंधित हों। और ये चार एक हैं, शेमा।

सभी यहूदी इस तथ्य पर विश्वास करते थे कि ईश्वर एक है। अपने पड़ोसियों के विपरीत जो विभिन्न देवताओं में विश्वास कर सकते हैं, सभी यहूदी जो यहोवा में विश्वास करते हैं, जिन्होंने खुद को प्रकट किया और अपने परदादा अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधी, और उस वाचा संबंध के

आधार पर एक राष्ट्र का गठन और विकास किया। हे इस्राएल, सुनो, हमारा परमेश्वर यहोवा, प्रभु एक है, यह आज तक एक ऐसा विश्वास होगा जिसे सभी यहूदी साझा करेंगे।

दूसरा, यहूदी विशिष्टतावाद और खतना। सभी यहूदी, चाहे वे किसी भी संप्रदाय से संबंधित हों, खुद को ईश्वर के साथ वाचा के रिश्ते में एक चुने हुए व्यक्ति के रूप में देखेंगे, और यदि आप पुरुष हैं, तो इस वाचा का चिह्न खतना है। मैं यह क्यों उठा रहा हूँ? खैर, मैं यह इसलिए उठा रहा हूँ क्योंकि आप लूका के दो अध्यायों से ही इसे देख पाएँगे।

ल्यूक हमें याद दिलाएगा कि यीशु और उनके माता-पिता यहूदी थे। जॉन द बैपटिस्ट और उनके माता-पिता यहूदी थे। और इससे पहले कि वे यहूदी धर्म के भीतर अपनी सांप्रदायिक संबद्धता की घोषणा करें, वे यहूदियों के इन मानदंडों और परंपराओं का पालन करेंगे जिनके बारे में हमें पता होना चाहिए।

तीसरा है टोरा। यहूदियों के लिए ईश्वर के कानून का पालन करना बहुत महत्वपूर्ण था। माना कि कानून की व्याख्या ही इस बात का कारण है कि परंपरा में अधिक रूढ़िवादी, अधिक उदार, अलग-अलग संप्रदाय हो सकते हैं।

और, बेशक, मैंने पहले मंदिर का ज़िक्र किया था। मंदिर एक ऐसी जगह होगी जहाँ महत्वपूर्ण त्यौहार और अनुष्ठान मनाए जाएँगे। यीशु के माता-पिता यहूदी होने के नाते जो कुछ भी करना ज़रूरी था, उसे करने के लिए मंदिर जाते थे।

यहूदी संस्कृति, धर्म और रीति-रिवाजों के केंद्र के रूप में मंदिर ही वह कारण होगा जिसके कारण लूका के दूसरे खंड में यहूदी दुनिया भर से यरूशलेम आएँगे और इस फसह उत्सव का हिस्सा बनेंगे। यहूदी, चाहे उनकी आस्था प्रणाली की मान्यताएँ कुछ भी हों, रूढ़िवादी, उदारवादी, मध्यम मार्ग के, सड़क से बाहर के, सभी इन चार मुख्य मान्यताओं में हिस्सा लेंगे। लूका को इस बात का एहसास था।

लूका अपने सुसमाचार में इस बात पर ध्यान देना चाहता था ताकि हमें याद दिला सके कि यीशु, दुनिया का उद्धारकर्ता, एक यहूदी के रूप में आया था। वह मसीहा के बारे में भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए आया था। और वह यह काम दूसरे मंदिर यहूदी धर्म के भीतर करने आया था।

वह यहूदी धर्म के बाहर एक पूरा संप्रदाय या आंदोलन स्थापित करने के लिए नहीं आया था, बल्कि वह अपने लोगों और दुनिया के लिए परमेश्वर के वादों को पूरा करने के लिए आया था। लूका के इस बुनियादी ढांचे को खुद स्थापित करने के बाद, आइए लूका के सुसमाचार के प्राप्तकर्ता की ओर मुड़ें। लूका ने अपने प्राप्तकर्ता का नाम थियोफिलस बताया है।

थियोफिलस को आमतौर पर गैर-यहूदी माना जाता है। इसलिए यहाँ हम थियोफिलस को, जो एक गैर-यहूदी है, एक ऐसी शैली प्राप्त करते हुए देखते हैं जिसे हम बाद में सुसमाचार कहेंगे। वैसे, उस समय सुसमाचार नामक कोई शैली नहीं थी।

यह एक ऐसी शैली होगी जिसे हम वास्तव में एक साथ रखेंगे, या ईसाई यीशु मसीह के जीवन कार्य के बारे में चार लेखन स्थापित करने के लिए आएंगे, जो सुसमाचार है। तो, ल्यूक एक गैर-यहूदी के रूप में लिख रहा है, और यदि आप चाहें, तो एक गैर-यहूदी अभिजात वर्ग थियोफिलस नामक एक गैर-यहूदी अभिजात वर्ग के लिए लिख रहा है।

वह उसे सर कहता है, जैसा कि हम पत्रों और सुसमाचार में देखेंगे। लेकिन इस बारे में सोचें। जब आप सुसमाचार पढ़ते हैं और इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हैं, तो सोचें कि लूका ने बहिष्कृत व्यक्ति के बारे में क्या कहा है।

एक अभिजात वर्ग एक अभिजात वर्ग को लिख रहा है। गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों के बारे में वह क्या कहता है, इस पर गौर करें। भूखे, बेसहारा और असहाय लोगों के साथ मसीहा की मुठभेड़ के उनके चित्रण पर गौर करें।

क्योंकि लूका के लिए, परमेश्वर का राज्य और इस प्राप्तकर्ता को जो संदेश दिया जाना चाहिए, वह कुछ ऐसा है जो समाज में किसी व्यक्ति के कुलीन, शक्तिशाली, अद्भुत होने की स्थिति से परे है। इसलिए थियोफिलस को सर के रूप में संदर्भित किया जाएगा और हमें इस थियोफिलस के बारे में क्या सोचते हैं, इस बारे में बहुत सारे अनुमान लगाने होंगे। लेकिन सुसमाचार के बारे में महत्वपूर्ण बातों को रेखांकित करने वाले एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति को लिखे गए पत्र के बारे में सोचें कि अगर मैं हमारी दुनिया के कुछ कुलीन समुदायों में लूका के सुसमाचार पर गंभीरता से प्रचार करने की हिम्मत करता हूँ तो लोग मुझसे नाराज हो सकते हैं, यह सोचकर कि मैं उन्हें परेशान कर रहा हूँ।

लेकिन आप देखिए, ल्यूक कुछ समझता है। प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार दुनिया के उद्धार के लिए है। और दोस्तों, दुनिया में मेरे गाँव के लोग भी शामिल हैं।

दुनिया में मेरे वे दोस्त भी शामिल हैं जो गरीबी और बहुत ही कठिन परिस्थितियों में रहते हैं। दुनिया में वे बच्चे भी शामिल हैं जो कुपोषण से मर रहे हैं, चाहे आप थियोफिलस जैसे कुलीन हों या ल्यूक जैसे। ल्यूक चाहते हैं कि हम ईश्वर के राज्य के संदेश को जानें, मसीहा का हमारे संसार में आना, एक वास्तविक बदलाव लाने के लिए है, सभी के जीवन को छूने के लिए है।

लेकिन यह थियोफिलस कौन है? हम उसकी पहचान के बारे में अनुमान के दायरे में हैं। इसलिए, इस बारे में छह अटकलें हैं कि हमें उसे किस तरह से देखना चाहिए। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि हमें उसे ल्यूक के संभावित संरक्षक के रूप में देखना चाहिए, जिसने दो लंबे लेख लिखे थे और उसे लेखन को प्रायोजित करने के लिए किसी की ज़रूरत थी।

दूसरों ने सुझाव दिया है कि हम उसे रोम में पॉल की कैद की निगरानी करने वाले रोमन अधिकारी के रूप में देखें या उसकी कल्पना करें। अब, जो लोग इस तरह से अनुमान लगाते हैं, वे कहेंगे कि, उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रेरितों के काम का अंत पॉल के जेल में होने के साथ होता है। यह संभव है कि तब लूका उस व्यक्ति को लिख रहा हो जो उस कारावास की निगरानी कर रहा था, ईसाई धर्म की रक्षा करने की कोशिश कर रहा था, और यह

सुनिश्चित कर रहा था कि वह स्वयं एक साधन बने जिसके माध्यम से यह शक्तिशाली सुसमाचार जिसके लिए पॉल को गिरफ्तार किया गया था, उसे आगे बढ़ाया जाएगा।

फिर से, यह सिर्फ एक विचार है। एक तीसरा दृष्टिकोण यह सुझाता है कि थियोफिलस एक अविश्वासी था, एक गैर-यहूदी जो ईसाई धर्म में रुचि रखता था, और लूका यह समझाने के लिए लिख रहा था कि ईसाई सिद्धांत क्या हैं। दूसरों ने सुझाव दिया है कि हम उसे एक नए विश्वासी के रूप में देखें जिसके बारे में लूका जानता है और सुसमाचार के संदेश के बारे में प्रारंभिक संपर्क के बाद उसे और अधिक निर्देश देने के लिए लिख रहा है, उसे विश्वास और ईसाइयों के विश्वास के बारे में और अधिक निर्देश दे रहा है।

मैं जिस नाम को बहुत सुनता आया हूँ, वह थियोफिलस नाम के इर्द-गिर्द काम करता है और खेलता है और कहता है, ओह, नाम का वास्तव में अर्थ है ईश्वर का मित्र, ईश्वर का प्रेमी, और वे इस अनुवाद पर काम करने की कोशिश करते हैं और कहते हैं, ओह। वास्तव में, इसका वास्तव में मतलब है कि यह कोई विशेष व्यक्ति नहीं है, बल्कि कोई ऐसा व्यक्ति है जो प्रभु से प्रेम करता है, जिसे लूका लिख रहा है ताकि सुसमाचार का संदेश आगे बढ़ाया जा सके। छठा दृष्टिकोण बताता है कि नाम एक पर्यायवाची है, और यह वास्तव में यह कहने के लिए है कि यह सभी गैर-यहूदियों के लिए लिखा गया एक सुसमाचार है। इन छह में से कौन सा सही है? मेरे पास आपके लिए बहुत गहरा जवाब है।

मुझे नहीं पता। हम अनुमान लगा रहे हैं। हम इसका अर्थ समझने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन आप देखिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप थियोफिलस की पूरी पहचान जानते हैं या नहीं। यह जानना महत्वपूर्ण है कि लूका ने सुसमाचार, तीसरा सुसमाचार, किसी दूसरे व्यक्ति को लिखा था, और उस सुसमाचार में प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व और सेवकाई के बीज, मूल्य और एक शक्तिशाली संदेश निहित है जिसे अगर आप और मैं अपनाएंगे, तो हम व्यक्तिगत और परिवर्तनकारी स्तर पर, यहाँ तक कि अपने घरों में और उससे परे भी, ईश्वर की शक्ति का अनुभव करेंगे। अगर हम इस बात को सामान्य रूप से समझ पाते हैं कि लूका कौन है और थियोफिलस कौन है, तो यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि सुसमाचार कब लिखा गया था।

खैर, जहाँ तक डेटिंग का सवाल है, डेटिंग के बारे में दो मुख्य सिद्धांत हैं। डेटिंग के बारे में एक दृष्टिकोण यह है कि आपको ल्यूक के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के बारे में सोचना चाहिए, जो प्रेरितों के काम के समाप्त होने से ठीक पहले लिखी गई थी। इसलिए, यदि आप उस सिद्धांत को मानते हैं, तो वास्तव में प्रेरितों के काम की पुस्तक बिल्कुल अंत में लिखी गई थी जब पॉल जेल में था।

यदि आप उस सिद्धांत को मानते हैं, तो आप यह कहने के लिए इसे पहले की तारीख देने जा रहे हैं कि ल्यूक का सुसमाचार और प्रेरितों के काम अधिकांशतः पॉल के जीवनकाल के दौरान या पॉल की मृत्यु के एक महीने से अधिक समय बाद नहीं लिखे गए थे। एक अन्य सिद्धांत कहता है, नहीं, यह बाद में हुआ। जो कहता है कि यह बाद में हुआ, वह अब तक का सबसे स्वीकार्य सिद्धांत है, जैसा कि मैं समझाऊंगा।

जो लोग मेरी तरह मानते हैं कि लूका का सुसमाचार 70 और 90 के बीच लिखा गया था और मेरे हिसाब से, 80 के दशक के आसपास, उनका तर्क है कि अगर लूका ने मैथ्यू की तरह मार्क के सुसमाचार पर भरोसा किया होता तो वह अपना सुसमाचार नहीं लिख सकता था। तब मार्क को लूका के लिखे जाने से पहले लिखा जाना चाहिए था। और अगर हम मार्क को 70 के दशक में मानते हैं, तो निश्चित रूप से, हम लूका को उससे पहले नहीं लिख सकते।

इस तरह के तर्क के साथ दूसरी बात यह है। अगर आप ल्यूक और उसके सुसमाचार की संरचना के बारे में सोचें, तो हमें यह बताने के लिए कुछ भी नहीं है कि वह एक डायरी लिख रहा था, कि वह घटनाओं को वैसे ही लिख रहा था जैसे वे घटित हो रही थीं, ताकि जब आखिरी बात घटित हो, तो वह कहे, फुल स्टॉप, बूम, अब मुझे इसे आपके फ्लॉस पर मेल करने दें। नहीं, लेखक इस तरह नहीं लिखते हैं।

आप जानते हैं कि अपनी खुद की पत्रिका के लिए भी। आप अपनी पत्रिका इस तरह नहीं लिखते। आप अपनी दिनचर्या के दौरान अपनी पत्रिका नहीं लिखते।

आप दिन के अंत में अपनी डायरी लिखते हैं। कोई व्यक्ति घटनाओं के संप्रेषण में समय लगने के बाद इतिहास लिखता है। इसलिए, मैं बहुमत के दृष्टिकोण की ओर झुकता हूँ कि ल्यूक का सुसमाचार 80 के दशक में लिखा गया था।

यदि आप 80 के दशक के दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं करते हैं, तो 70 और 90 के दशक की सीमा में काम करें। यह सामान्य आराम क्षेत्र है, लेकिन मैं इससे अधिक निश्चित होना चाहता हूँ क्योंकि सुसमाचार में हम जिन चीजों को देखेंगे उनमें से कुछ इस पर प्रकाश डालने में मदद करेगी। ल्यूक का उद्देश्य क्या है? आप कहते हैं, ओह, इस सुसमाचार को पढ़ने के लिए मुझे बहुत सी चीजें जानने की जरूरत है।

हाँ। क्या आपने देखा है कि ज़्यादातर लोग लूका का सुसमाचार नहीं पढ़ते? क्योंकि यह बहुत लंबा है। मेरा मतलब है, आप पहले अध्याय से शुरू करते हैं।

आप इसे पूरा करने से पहले एक या दो बार झपकी लेते हैं। लूका के सुसमाचार के बारे में हमें जो एकमात्र चीज़ पसंद है, वह है दृष्टांत। तो चलिए मैं आपके लिए नींव रखने की कोशिश करता हूँ ताकि आप मेरे साथ मज़े कर सकें।

तो, लूका का उद्देश्य। लूका अपना सुसमाचार क्यों लिख रहा है? लूका जीवन की घटनाओं और यीशु मसीह की सेवकाई के इतिहास को परमेश्वर की उद्धार की योजना और भविष्यवाणी की पूर्ति की धार्मिक व्याख्या देने के साधन के रूप में प्रस्तुत करता है। लूका के लिए, इतिहास उसे दुनिया भर में ईसाई धर्म की शुरुआत, उत्थान, विकास और विस्तार को संप्रेषित करने के लिए आवश्यक संसाधन देता है।

मार्क स्ट्रॉस के शब्दों में, लूका वर्तमान युग में ईश्वर के प्रामाणिक लोगों के रूप में चर्च के दावों को स्वीकार करता है और उन्हें वैध बनाता है। लूका के लिए, यह सब इस बारे में है कि आप यीशु की

सेवकाई को कैसे समझते हैं और कैसे वह सेवकाई आज भी पृथ्वी के छोर तक जारी है। लूका टिमोथी जॉनसन, लूका के उद्देश्य को सबसे संक्षिप्त रूप में बताने की कोशिश करते हुए लिखते हैं कि लूका का उद्देश्य हेलेनिस्टिक पाठकों के बाहर ईसाई आंदोलन को दार्शनिक रूप से प्रबुद्ध, राजनीतिक रूप से हानिरहित, सामाजिक रूप से परोपकारी और परोपकारी संगति के रूप में प्रस्तुत करना है।

लेकिन इसका तात्कालिक उद्देश्य यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों से बने बहुलवादी वातावरण के संदर्भ में अंदरूनी लोगों के लिए सुसमाचार की व्याख्या करना है। मुझे पसंद है कि कैसे क्रेडॉक ने ल्यूक के उद्देश्य को बताने की कोशिश की। वह तीन कहानियाँ लिखते हैं; यहूदी धर्म, यीशु और चर्च को किसी ऐसे तरीके से जोड़ा जाना चाहिए जो ऐतिहासिक और धार्मिक दोनों हो।

नए नियम में लूका के अलावा कोई भी लेखक ऐसा नहीं करता। और शायद लूका ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं करता कि थियोफिलोस जैसे किसी व्यक्ति या व्यक्तियों को यह जानने की ज़रूरत है। ज़्यादा संभावना यह है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि लूका पर दो वास्तविकताएँ हावी हैं।

सबसे पहले, यीशु की घटना अतीत में और आगे तक दर्ज की गई है। उनका जीवन और कार्य इतिहास के विषय हैं। दूसरा, चर्च अब एक आंदोलन है, दुनिया में एक संस्था है।

और लूका का मानना है कि मसीह के लौटने में अभी बहुत समय लगेगा। आखिरकार, अगर कोई यह मानता है कि प्रभु का दिन निकट है, तो उसे शोध करके व्यवस्थित विवरण लिखने की ज़रूरत नहीं है। लूका का मानना है कि प्रभु यीशु मसीह और चर्च के काम और उसके निरंतर विस्तार के बारे में बताने से लोगों को मसीहा के काम के बारे में ज़्यादा जानकारी मिलेगी।

नोलैंड, जिनकी टिप्पणी लूकन अध्ययनों में काफी लोकप्रिय हो गई है, लिखते हैं, लूका के उद्देश्य के लिए, सामान्य और वास्तव में लंबे समय से चली आ रही पारंपरिक धारणा यह है कि लूका एक गैर-यहूदी ईसाई था जिसने पहली शताब्दी के उत्तरार्ध के गैर-यहूदी चर्च के लिए अपना सुसमाचार लिखा था, कि यह चर्च के भीतर के मुद्दों से संबंधित एक पादरी दस्तावेज था, और यहूदियों तक ईसाई पहुंच का समय बहुत पहले बीत चुका था, भले ही कुछ यहूदी ईसाई चर्च के चल रहे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हों। मैं इसे कैसे सारांशित करूँ? मैं इसे बहुत ही सरल शब्दों में इस प्रकार सारांशित करता हूँ। लूका ने अपना सुसमाचार थियोफिलस को यीशु मसीह के बारे में बताने के लिए लिखा।

यदि आप क्षमाप्रार्थी दृष्टिकोण को मानते हैं, तो आप कहते हैं कि निर्देश का एक हिस्सा प्रभु यीशु मसीह के विश्वास की रक्षा करने में मदद करना है। लेकिन उससे परे, वह यह इसलिए कहता है ताकि यह मंत्रालय और मसीहाई मिशन जारी रहे, इतिहास में फंसा न रहे, बल्कि एक जीवित जीव बने, आगे बढ़े, एक आंदोलन जो आगे बढ़ रहा है और बाकी दुनिया में फैल रहा है। मुझे इस परिचय के पहले भाग के लिए कुछ बातों को फिर से याद करने दें।

इस अध्ययन में अब तक मैंने जो करने की कोशिश की है, वह आपको तीसरे सुसमाचार का एक सामान्य अवलोकन देना है, जिसे हम लूका कहते हैं। यह तीसरा सुसमाचार किसी ऐसे व्यक्ति

द्वारा लिखा गया था जिसने लेखन में अपना परिचय नहीं दिया। परंपरा हमें याद दिलाती है, या हमें बताती है, कि उसका नाम लूका है।

हमारे पास पाँच गवाह हैं जो इस विचार का समर्थन करते हैं कि लूका, चिकित्सक, प्रिय साथी, वही है जिसने लूका के सुसमाचार को लिखा, इसे थियोफिलस को लिखा। मैंने आपका ध्यान इस तथ्य की ओर भी आकर्षित किया कि इस पत्राचार में शामिल दो लोग सभी कुलीन वर्ग से हैं। लेकिन सुसमाचार वह सुसमाचार है जो शायद सभी नए नियम के सुसमाचारों में सबसे व्यावहारिक है।

मैं गरीबों, बहिष्कृतों, हाशिए पर पड़े लोगों के बारे में बात कर रहा हूँ, और कैसे यीशु उन तक पहुँचने के लिए आता है। और मैंने इस सुसमाचार के उद्देश्य को भी स्पष्ट करने की कोशिश की है। अगले व्याख्यान में, मैं आपको पत्र की रचना के बारे में कुछ मुख्य बातों को देखने के लिए आगे ले जाऊँगा।

यह कैसे रचा गया है, इसमें कौन सी चीजें शामिल हैं, लूका किन विषयों को विकसित करने की कोशिश कर रहा है, यह लूका के दूसरे खंड, अर्थात् प्रेरितों के काम की पुस्तक से कैसे संबंधित है, और वे चीजें हमें कैसे मदद करती हैं, हमें एक अच्छा ढांचा प्रदान करती हैं, जब हम स्वयं पाठ, अर्थात् लूका के सुसमाचार के करीब पहुँचते हैं। मुझे उम्मीद है कि शुरुआत आपको इस सुसमाचार के बारे में कुछ सामान्य जानकारी देती है। यह मेरी आशा है कि जैसे-जैसे हम इस सीखने के अनुभव के साथ आगे बढ़ेंगे, आप न केवल इस व्याख्यान में चर्चा की जा रही बातों पर ध्यान देंगे, बल्कि आप इसे बिब्लिकाई-लर्निंग में पाई जाने वाली कुछ सामग्री के साथ पूरक या पूरक भी करेंगे, संदर्भित की जा रही कुछ पृष्ठभूमि जानकारी को क्रॉस-चेक करेंगे, इस विशेष वार्तालाप में जो चीजें इतनी उन्नत नहीं हैं, उन पर गहराई से खुदाई करने की कोशिश करेंगे, और मेरे साथ आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे।

मैं आपको यह भी प्रोत्साहित करूँगा कि जब आप व्याख्यान के बाकी हिस्से को सुनें तो सुसमाचार पढ़ने के लिए समय निकालें, अगला व्याख्यान सुनने से पहले एक या दो अध्याय पढ़ें। इस तरह, आप बारीकी से अनुसरण करने में सक्षम होंगे और इस विशेष अध्ययन में जो किया जा रहा है उससे अधिक लाभ उठा पाएंगे। बिब्लिकाई-लर्निंग में हमारे साथ जुड़ने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मेरी आशा और प्रार्थना है कि आप ईश्वर को न केवल आपको बुद्धि प्रदान करने दें, बल्कि आपको अपने स्थान पर आमंत्रित करें, जहाँ आप मसीह यीशु में उद्धार पाएँगे, जहाँ आप एक ईसाई के रूप में विकसित होंगे, और जहाँ आप पाएँगे कि यीशु हम सभी के लिए आए थे, कुलीन, अमीर, गरीब, लंबे, छोटे, शानदार बालों वाले और वे लोग जिन्हें ईश्वर ने स्वयं प्राकृतिक बाल कटवाने का सौभाग्य दिया है। वे उन्हें मेरे जैसे गंजे लोग कहते हैं। हम सभी ईश्वर की बचत की कृपा का हिस्सा हैं।

और मुझे उम्मीद है कि हम साथ मिलकर सीखेंगे और एक दूसरे से और भी ज़्यादा प्यार करेंगे। शुक्रिया। आमीन।